

विदेशी विज्ञापनों का चक्रव्यूह



भारतीय समाज अपने संस्कारों के लिए विश्व में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसे समाज को तोड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं हो सकता था। इस समाज की शिक्षा व्यवस्था से लेकर संस्कारों को तोड़ने के लिए सबसे पहले भारतीयों की मानसिकता पर काबू पाना सबसे बड़ी चुनौती थी जिसे विदेशियों ने स्वीकार कर सफलता अर्जित की! इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिस चक्रव्यूह की रचना की गई उसका आधार है विज्ञापन। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित

जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4c1BjdUlfT0JyVHM/edit?usp=sharing

आप कई दिनों से सुन रहे होंगे कि हमारे देश में 5000 से ज्यादा विदेशी कंपनियाँ अपना धंधा कर रही हैं। ये सब कंपनियाँ ऐसे ही नहीं आ जातीं, इन्हें हमारे देश के महान नेता बुलाकर लाते हैं - कभी विनती से तो कभी रिश्वत से! ऐसे ही एक नेता थे जिनका नाम है सुखराम। ये नरसिम्हाराव सरकार में दूरसंचार मंत्री थे। सीबीआई ने छापे में इनके सरकारी बंगले में गद्दों के नीचे से 40 लाख रूपए बरामद किए तथा पूरे घर की तलाशी से 3.6 करोड़ नकद बरामद हुए! (http://en.wikipedia.org/wiki/Sukh_Ram) जब ये दूरसंचार मंत्री थे तो इन्होंने एक अमरीकन कंपनी से दलाली ली थी भारत में धंधा करने के लिए। आप में से कुछ लोगों को शायद याद होगा कि टेलीफोन के यंत्र बनाने की एक भारतीय कंपनी थी जिसका नाम था ITI। जिसके फोन आज से लगभग 10-15 साल पहले बना करते थे। ये फोन बूथ पर भी लगते थे और STD की दुकानों पर भी देखने को मिलते थे। पहले केवल यही कंपनी भारत के लिए टेलीफोन बनाती थी और भारत में इसके 6 प्लांट थे जिनके कारण भारत को फोन आयात नहीं करने पड़ते थे और पैसा बच जाता था। इन महाशय ने ITI कंपनी के फोन लेने बंद कर दिए। चूँकि उस समय सबसे ज्यादा फोन सरकारी महकमों में होते थे, ITI को इस हरकत से बहुत नुकसान हुआ और धीरे धीरे उसके सारे प्लांट बंद हो गए। ITI जो फोन 150 रूपए में बेचती थी, वही फोन

वह अमरीकन कंपनी 650 रूपए में बेचती थी। अर्थात एक पीस पर 500 रूपए का नुकसान!

इन्हीं मीर जाफरों में एक और नाम आता है सुश्री जयललिता जी का। एक छापे में इनके घर से निम्नलिखित वस्तुएँ बरामद हुयीं:

1. 40 किलो सोना
2. 800 किलो चांदी
3. 10,500 साड़ियां
4. 7,500 सैंडल
5. 44 एयर कंडीशनर
6. 19 लिमोसिन कार
7. 65 करोड़ नकद

(<http://www.rediff.com/news/2000/jul/05jaya.htm> ;

<http://www.frontline.in/static/html/fl1704/17040380.htm>)

ये इनकी उन दिनों की जमा पूँजी है जब हमारा संविधान इन्हें एक नंबर के रास्ते से काम करने का 1 रूपए 25 पैसे प्रतिमाह देता था अर्थात इनकी महीने की सरकारी आमदनी 1 रूपए 25 पैसे थी! फिर यह सब आया कहाँ से? मुख्यमंत्री के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान इन्होंने तमिल नाडू के अमूल्य चन्दन के जंगल कौडियों के दाम पर विदेशी कंपनियों को बेच दिए थे! रिश्वत के तौर पर इन्हें उपरोक्त लिखित सामान से सुसज्जित किया गया।

देश के मशहूर घोटालों में से एक घोटाला है - चारा घोटाला जिसे देश का बच्चा बच्चा जानता है। इस घोटाले में लालू प्रसाद यादव ने 960 करोड़ रूपए की

रिश्वत खाई थी। दुःख की बात तो यह है कि इस घोटाले के बाद भी जनता ने उन्हें 7 साल तक मुख्यमंत्री पद देकर रखा! यही नहीं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती राबड़ी देवी भी बिहार की मुख्यमंत्री रहीं जिन्हें अपना नाम तक लिखना नहीं आता और जो प्रदेश का सही-गलत समझ नहीं सकती। एक मीर-जाफर ने कुछ रूपए लेकर East India Company को भारत लूटने का रास्ता दिया था तो आप अंदाज़ा लगाइए कि ये मीर जाफर कितने भयावह होंगे जो 960 करोड़ की दलाली लेकर देश को बेच रहे हैं!

विदेशी कंपनियाँ नेताओं को खरीदती हैं या नेता रिश्वत खाते हैं ताकि विदेशी कंपनियाँ हमारे देश में आ सकें। देश में आकर क्या होगा? मुनाफा। मुनाफा कौन देगा? जनता। कैसे मुनाफा देगी जनता? विदेशी सामान खरीदकर! इसका मतलब हम सब भी कोई मीर जाफर से कम नहीं हैं जो सुबह से लेकर शाम तक अपने देश को बेचते हैं! हम उतने ही गुनाहगार हैं जितने नेता गुनाहगार हैं! सुबह उठते ही हमें लिफ्टन, ताज महल, ब्रुक बॉर्ड की चाय चाहिए। उसके बाद हम दांतों में कोलगोट रगड़ते हैं। नहाने के लिए लक्स चाहिए क्योंकि माधुरी दीक्षित उससे नहाती है। फिर deo लगाएंगे इस उम्मीद में कि कोई लड़की आकर हम से भी चिपक जाए जैसे टीवी में दिखाते हैं। छोटे छोटे बच्चे कहते हैं “I am a complan boy. I am a complan girl.”। कॉम्प्लान का मतलब टिन का डिब्बा, मतलब हमारे देश के बच्चे टिन के हैं! अगर यह सब खाते रहेंगे तो टिन के ही रहेंगे। आज कल अमिताभ जी बच्चों को मैगी खिला रहे हैं। सड़े हुए मैदे की मैगी से पेट नहीं भरता तो माताएँ lays के चिप्स पकड़ा देती हैं। यही कारण है कि आज कल के बच्चे माँ-बाप के साथ पेट पकड़ कर डॉक्टरों के यहाँ पहुँचे रहते हैं! गलती हमारी ही है क्योंकि हम टीवी देखते हैं जो मूर्ख बनाने का सबसे शक्तिशाली यंत्र है। कहने के लिए हमारे यहाँ जो दूरसंचार विभाग है वो

ऐसी नकारात्मकताओं को रोकना तो दूर, उन्हें बढ़ावा देता है क्योंकि सभी पर विदेशी कंपनियों का भारी दबाव होता है!

विदेशी कंपनियाँ पहले अपना नाम बेचती हैं फिर उसके बाद अपनी सोच। पिछले 15-20 सालों में हमारे देश का पहनावा बहुत तेज़ी के साथ बदला है और वो भी बहुत फूहड़ तरीके से! एक बहुत ही ढीली ढाली पतलून का फैशन चला है जिसको बैगी कहते हैं। जब पूछा जाए कि बैगी क्यों पहनी है तो कहते हैं आज कल यही पहनते हैं, तुम पुराने ज़माने के हो। फिर पूछिए, इसका मतलब पता है तो कहेंगे कि नहीं! अमरीका में beggar यानी भिखारी का conotation या short form है beggie जिसका मतलब होता है जो भिखारी जैसा दिखे उसे beggie कहते हैं। यानी आप जान बूझकर भिखारियों को आदर्श मानकर उनका अनुसरण कर रहे हैं तो फल क्या होगा? आप की सोच जैसी ही आप कि स्थिति हो जायेगी। जिम्मेदार कौन? फिर से टीवी!

अब तो यह हाल है कि विदेशी कंपनियाँ आटा और नमक तक बाहर से लाकर बेच रही हैं! मतलब अब हम आटा और नमक भी नहीं बना सकते? क्या आपको पता है हमारे देश में चाय किसान पैदा करता है? विदेशों में चाय की खेती नहीं होती। विदेशी कंपनी चाय की पत्ती (fine quality green leaf) अलग कर लेती हैं और उसका कूड़ा जिसे tea dust कहते हैं, वो डिब्बों में बंद कर आपको बेच देती है! जो आप ताज महल, लिफ्टन या ब्रुक बॉड पी रहे हैं वो चाय पत्ती नहीं चाय का कूड़ा है! यह कूड़ा उतना ही जहरीला है जितनी कि सिगरेट क्योंकि दोनों ही निकोटिन से भरपूर हैं जो कि एक उन्मादक पदार्थ होता है। निकोटिन पीने से कैंसर का खतरा तो होता ही है और भी कई जानलेवा बीमारियों का कारक है निकोटिन। जो व्यक्ति तीन या अधिक बार चाय पीता हो उसे आप देख लेना, चाय न मिलने पर उसके सिर में दर्द होने

लगता है, काम में मन नहीं लगता और चिडचिडाहट पैदा होती है क्योंकि उसका शरीर चाय के नशे की गिरफ्त में होता है! अगर पीना ही है तो गरम पानी पीजिए जो पथरी नहीं होने देता, स्वाद चाहिए तो नारियल का पानी, नीम्बू पानी, फलों का रस पीजिए जो स्वास्थ्यवर्धक हैं लेकिन जहर मत पीजिए क्योंकि आपके लिए न सही मगर आपके परिजनों और आपके देश के लिए आपके प्राणों का बहुत महत्व है।

दुनिया का सबसे घटिया किस्म का दांत साफ़ करने के लिए अगर कोई पदार्थ है तो कोलगेट के फोर्मुले से बने टूथपेस्ट। अगर कोई आपसे कहे कि आप जानवरों की हड्डी से दांत साफ़ क्यों नहीं कर लेते तो आपका प्रत्युत्तर उस व्यक्ति के लिए संतोषजनक नहीं होगा क्योंकि यह बिलकुल अटपटी बात है लेकिन आप जो रोज़ कोलगेट से दांत रगड़ते हैं, वो क्या है? टूथपेस्ट में DiCalcium Phosphate नाम का एक पदार्थ होता है जो जानवरों की हड्डियों से निकाला जाता है। यह टूथपेस्ट इतना घटिया उत्पाद है कि इस पर न तो आपको कोई ISI का चिन्ह मिलेगा और न ही AGMARK का क्योंकि इन दोनों से इसे स्वीकृति प्राप्त नहीं है! दुनिया में सबसे ज्यादा दांतों के मरीज यूरोप और अमरीका में हैं और वहाँ के डॉक्टरों का मानना है कि इसका कारण टूथपेस्ट ही है। क्या आपको पता है यूरोप के कई देशों में भारत से नीम के दातुन अब आयात होने लगा है? आधुनिक विज्ञान ने इस बात की पुष्टि की है कि नीम के दातुन से मुँह में लार अधिक बनती है जिससे पाचन क्रिया ठीक रहती है और रोग नहीं होते क्योंकि 90% रोगों की भूमि होता है पेट! अकेला नीम का पेड़ अगर आपके चौखट पर है तो वह हवा से 200 भिन्न प्रकार के bacteria और virus खत्म कर देता है! एक नीम का पेड़ एक साल में 15 लाख रूपए की ओक्सीजन देता है! इतना अनमोल उपहार है प्रकृति का और जो व्यक्ति दातुन कहता है उसे हम मूर्ख समझते हैं और जो कोलगेट करता है उसे

हम बहुत आधुनिक मानते हैं जबकि सच्चाई पूर्णतया विपरीत होती है। अमरीका में कोलगेट पर प्रतिबंध है। अमरीका ने अब नीम के पेड़ पर अपना पेटेंट करा लिया है ताकि भविष्य में यदि भारत से भारी मात्रा में आयात करना पड़े तो उसे किसी प्रकार की कानूनी बाधा का सामना न करना पड़े। ये सब अमरीका और जर्मनी में हुए शोध का नतीजा है जिसमें यह पता लगा कि नीम कैंसर से लड़ने के लिए बहुत शक्तिशाली औषधि है।

एक बार एक कॉलेज में कोल्ड ड्रिंक की प्रतिस्पर्धा हुई। यह एक सच्ची घटना है! उस प्रतिस्पर्धा में दो लोग अंतिम राउंड में पहुँचे। अंतिम राउंड के बाद दोनों प्रतिस्पर्धियों की तत्काल मृत्यु हो गई! कारण यह था कि 8 लीटर कोल्ड ड्रिंक पीने के बाद उनके शरीर में इतना कार्बन डाई ऑक्साइड जमा हो गया था जिससे तत्काल मृत्यु निश्चित ही थी क्योंकि कार्बन डाई ऑक्साइड शरीर से बाहर निकालने की चीज़ है, अंदर लेने की नहीं! कोल्ड ड्रिंक एक ऐसा धीमा जहर है जो धीरे-धीरे आपको अंदर से खत्म करता रहता है। इसमें दो बेहद जहरीले पदार्थ होते हैं - Sodium Glutamate तथा Potassium Sorbate। अगर आप एक दांत को कोल्ड ड्रिंक में डालकर रख दें तो वह 9 दिन में ही गायब हो जाएगा जबकि वही दांत मिट्टी से एक साल बाद भी वैसा ही निकलेगा! सोचिए, हमारे पेट में जाकर यह क्या-क्या गला देती होगी कोल्ड ड्रिंक! यही जहर हम रोज़ पीते हैं और इन कंपनियों को 240 करोड़ का मुनाफा हर साल कमाकर देते हैं। हम जितने गुनाहगार हैं, उससे कहीं ज्यादा गुनाहगार हैं ये फ़िल्मी सितारे और क्रिकेट के खिलाड़ी जिनमें रत्ती भर का भी देश प्रेम नहीं है। इतना पैसा होने के बावजूद भी यह जानबूझकर इन सब पदार्थों का विज्ञापन करते हैं जिनसे लोग प्रभावित होकर देश को लुटवाने में भागीदार बनते हैं। आप खुद से पूछ कर देखिए, ये कंपनियाँ क्यों इन लोगों को करोड़ों रूपए दे रही हैं विज्ञापन के लिए? क्योंकि इन्हें पता है इनके लगाये करोड़ों

रूपए, अरबों बनकर इनकी जेबों में वापिस आ जाएँगे जिन्हें लाने का काम करेगी भारतीय जनता!

भारत में एक कानून है कि सिगरेट कंपनी अपना विज्ञापन नहीं दे सकती। ऐसे में ये कंपनियाँ क्रिकेट का टूर्नामेंट आयोजित करती हैं और जगह जगह अपना नाम लिख देती हैं स्टेडियम में। भारत उन मूर्खों का देश है जहाँ दुनिया के सबसे अधिक क्रिकेट प्रेमी बसते हैं। इस अकेले क्रिकेट की वजह से एक घंटे में 250 करोड़ का कामकाजी नुकसान हमारे देश को होता है! आज कल ये खेल नहीं रह गया है, सब कुछ फिक्स होता है और जो पकड़ा जाए वो चोर होता है जैसे हाल ही में एक क्रिकेटर श्रीसंत के साथ हुआ। आप को जानकार यह आश्चर्य होगा कि दुनिया का कोई भी सफल देश क्रिकेट नहीं देखता! अमरीका, जर्मनी, फ्रांस, चीन, जापान आदि कोई भी क्रिकेट नहीं देखता क्योंकि उन्हें पता है कि उससे उनके देश का क्या नुकसान होने वाला है। यह कुछ 12-13 गुलाम देश हैं भारत सहित जहाँ यह पागलपन सिर चढ़कर बोलता है।

जिस चीज़ में कोई बात होती है, उसका कभी भी विज्ञापन नहीं आता। अगर ऐसा होता तो सबसे ज्यादा विज्ञापन हमारी प्रकृति ही करती! जिस चीज़ में कुछ नहीं होता, सबसे अधिक नुमाइश की जरूरत भी उसी चीज़ को होती है। इस टीवी ने पूरे समाज का काम खराब कर रखा है। यह अकेला यंत्र हमारी गिरी हुई सोच के लिए उत्तरदायी है। एक परिवार में हर उम्र का व्यक्ति जब टीवी देखता है तो उसे पता होता है कि इसमें नैतिक तो कुछ भी नहीं है पर फिर भी देखता है मनोरंजन के नाम पर। फिल्मों के गाने हों या खुद फिल्म, अश्लीलता को ही नए दौर के संस्कार के रूप में पेश करने की कोशिश में हैं। अगर ऐसे समाज में बलात्कार की घटनाएँ बढ़ती हैं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। यूरोप और अमरीका में सबसे अधिक संख्या है कुंवारी माताओं की। ये बच्चे

11-19 साल में ही माता पिता बन जाते हैं। जन्मे बच्चों का लालन पालन जिन स्कूलों में होता है उन्हें कॉन्वेंट स्कूल कहते हैं वहाँ, जिनमें हमारे देश के अंदर माता पिता बड़े शौक से बच्चों के दाखिले के लिए धक्के खाते हैं! अमरीका में सबसे अधिक है बलात्कारों की दर। वहाँ कई इलाके तो ऐसे हैं जहाँ सामूहिक दुष्कर्म एक आम बात है। हम लोग जिस चीज़ को टीवी में तलाशते हैं, वो मनोरंजन नहीं चारित्रिक हरण कहा जाए तो उचित होगा। अमरीका में एक कमीशन है जिसके आँकड़े यह बताते हैं कि पिछले 35 सालों में 9 करोड़ युवा गलत रास्तों पर चले!

क्या आपने कभी देखा है कि किसी विदेशी कंपनी या सरकार ने भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, अब्दुल हमीद आदि नायकों का आदर्श कभी प्रस्तुत किया हो? अगर ऐसा किया होता तो इस देश की जनता जागरूक हो जाती और इन गद्दारों को मार-मार कर बंगाल की खाड़ी में फेंक देती! ये आदर्श प्रस्तुत करते हैं अभियुक्तों और असामाजिक तत्वों के जैसे संजय दत्त, श्री संत आदि। आजकल तो सारी सीमारें पार करते हुए एक प्रोग्राम भी आता है टीवी पर, “बिग बॉस”। इसमें भाग लेने वाले प्रतिस्पर्धी होते ही हैं कोई बदनाम शख्सियत जिनमें से एक तो अभी क्रिकेट के सट्टे में पकड़ा गया, विन्दु दारा सिंह। दुःख की बात तो यह है कि हमारे देश में पूरा का पूरा परिवार, क्या बच्चे-क्या बूढ़े, मजे से इन अश्लील और कुसंस्कार पूर्ण धारावाहिकों का आनंद बटोरते हैं! एक भ्रष्ट सरकार और विदेशी कंपनियाँ कभी नहीं चाहेंगी कि देश की जनता में प्राण आयें इसीलिए उन्होंने मिलकर एक ऐसा धीमा जहर हमारे देश की रगों में उतार दिया है जिससे हम धीरे-धीरे सोने लगे हैं। परंतु अब यह कहने से काम नहीं चलेगा कि “इस देश का कुछ नहीं होने वाला”। हम ही देश हैं, यही सोचकर अब हमें उठना होगा!

जय भारत!